प्रतिहार,तोमर,तथा चौहानों का सत्ता सघर्ष

- महाराजा हर्ष की मृत्यु(647ई.) के बाद उत्तरी भारत में काफी समय तक अराजकता का वातावरण रहा | इसका लाभ उठाते हुए कई शक्तियां मैदान में उत्तरी |
- जहां तक हरियाणा प्रदेश का प्रश्न है यहां तोमरों ने अपनी बढ़ा ली | अनंगपाल नामक तोमर शासक ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाकर(736ई.) इसके आस-पास के क्षेत्र पर स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली |
- पूर्व में इसी समय एक अन्य शक्ति कन्नौज के राजा यशोवर्मन के रूप में उदय हुई | उसने तोमरों को अपनी अधीनता स्वीकार के लिए बाध्य किया,ऐसे साक्ष्य हमें मिलते है |
- परन्तु राजा यशोवर्मन का हरियाणा पर अधिपत्य थोड़े दिन ही रहा लगता है, क्योंकि कश्मीर के शासक ललितादित्य मुक्तपीड ने उसे हराकर यहां अपना शासन लागू कर दिया |
- ललितादित्व के उत्तराधिकारी बड़े अयोग्य निकले | वे उसके विशाल साम्राज्य को संभालने में असमर्थ सिद्ध हुए | फलत: एक बार फिर सब तरफ अराजकता फैल गई, जिस का लाभ कन्नौज के तत्कालीन प्रतिहार शासक वत्सराज(775-800) ने उठाया |
- वत्सराज का भी हरियाणा पर अधिक दिन पर अधिकार नहीं रहा,ऐसा पता चलता है उसे राष्ट्रकूटों ने यहां से निष्कासित कर दिया |
- तोमरों ने इस स्थिति का लाभ उठाकर पुन: अपनी शक्ति बढ़ा ली, और एक बार फिर यहां के स्वतंत्र शासक बन गए | लेकिन उनके भाग्य के भी स्वतंत्रता का सुख अधिक भोगना नही था |
- बंगाल के पालवंशीय शासक धर्मपाल ने उन्हें हराकर अपने अधीन कर लिया,यह धर्मपाल की खलीमपुर की प्रशस्ति से पता चलता है |
- थोड़े समय बादराष्ट्रकूटों के सितारे भी गर्दिश में डूब गए | वत्सराज के पराक्रमी पुत्र नागभट्टने उन्हें कन्नौज से खदेड़ दिया और हरियाणा पर भी अधिकार स्थापित कर लिया |
- नागभट्ट दिवतीय की मृरही त्यु संभवत: 833ई. के आस-पास हुई | उसके बाद उसका पुत्र रामभद्र(833-36) सिंहासनपर बैठा | यह शासक अपने पिता जैसी पराक्रमी नहीं था |अत: इसके राजकाल में स्थिति डावांडोल-सी रही |
- पर उसके पराक्रमी पुत्र मिहिरभोज(836-85) ने इसे संभाल लिया | मिहिरभोज(जिसे भोज प्रथम के नाम से जाना जाता है) अपने शौर्य,साहस,बुद्धिमत्ता,और चतुर्थ से नागभट्ट वाली दशा फिर पैदा कर दी |
- उसके समय में पेहवा उत्तरी भारत का बहुत व्यापारिक केंद्र था, यहां विशेष रूप से घोड़ों की सौदागरी होती थी | प्रतिवर्ष घोड़ों के मेले लगते थे | खरीद-बेच कर लगा हुआ था,जोकि मंदिरों में दान के रूप में चला जाता था |
- भोज के बाद उसका पुत्र महेन्द्रपाल प्रथम गद्दी पर बैठा (885ई.) | वह अपने पिता की भांति सफल शासक नहीं था | इसीलिए कुछेक क्षेत्रों के उसके हाथ से निकल जाने के उल्लेख हैं | संभवत: हरियाणा के ऊपर का भी बहुत-सा क्षेत्र उसके नियत्रंण से बाहर हो गया था | पर शेष हरियाणा पर उसका अधिकार विधिवत् बना रहा |
- महेन्द्रपाल की मृत्यु (910 ई.) के बाद प्रतिहार राज्य का पतन होना प्रारंभ हो गया | सब तरफ अराजकता फ़ैल गई | उसका लाभ उठाते हुए गोग्ग, पूर्णराज और देवराज के वंशज स्वतंत्र शासक हो गए, ऐसा लगता है | अब तोमरों का भाग्य चमक उठा |

तोमर वंश

- तोमर,तौंवर,तुंवरतंवर सब शब्द एक ही हैं | कई फारसी की पुस्तकों में तोंर, तुनुर, तुंग शब्द भी इस वंश के लिए प्रयुक्त हुए हैं | परंतु शुद्ध नाम तोमर है | आजकल तंवर अधिक प्रचलित है |
- शिलालेख में स्पष्ट रूप से लिखा है कि यहां इस वंश का उदय जौल नामक सरदार द्वारा हुआ था | जौल एक स्वतंत्र शासक नहीं था | वि.सं. 1685 (1628 ई.) की एक तोमर वंशावली में अनंगपाल की पांचवीं पीढ़ी में 'जवालु' नाम लिखा है | यह वास्तव में शिलालेख में वर्णित जौल है | तोमर वंश का शक्तिशाली सरदार अनंगपाल इससे पांच पीढ़ी ऊपर हुआ था | इसके मान लेने से तिथिक्रम भी ठीक हो जाता है |
- आठवीं शती में इस अनंगपाल ने छोटे-से तोमर राज्य (ठिकाने) की नींव रखी थी | उसकी राजधानी (मुख्यालय) उसकी बसाई नगरी दिल्ली

(ढिल्लीका) थी | उसकी कुछ पीढ़ियों बाद जौल हुआ | वह बड़ा पराक्रमी था | उसने यहां स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली थी -उसकी मुद्राओं के मिलने से यह सिद्ध होता है | ये मुद्राएं चलाने के बाद उन्होंने नागभट्ट दि्वतीय की अधीनता ले ली थी |

- फिर आपृच्छ देव की मुद्राएं मिलती है ये महेंद्रपाल से स्वतंत्र होने के बाद चलाई होंगी | आपृच्छ्य देव का विरुद गोग्ग रहा होगा,ऐसापेहवा के शिलालेख से संकेलित है |
- प्रतीत होता है कि आपृच्छ्य भी अपने पूर्वजों की तरह प्रतापी राजा था | उसने तोमरों को बहुत समय बाद पुनः सत्ता प्रदान की थी |
- ऐसा ही उसका उत्तराधिकारी पीपलराज देव(897-919) था जिसने आपृच्छ के काम को आगे बढ़ाया | पीपलराज की मुद्राएं मिलती है, जिससे जाहिर है कि वह भी स्वतंत्र सत्ता बनाए हुए था |
- परंतु उसके बाद तीन राजाओं अर्थात् रघुपाल(919-940),विल्हणपाल(940-961) और(961-997) की कोई मुद्रा नहीं मिलती | इसका अर्थ है कि ये तीनराजा स्वतंत्र शासक नहीं थे |
- गोपाल के बाद उसके उत्तराधिकारी सल्लक्षपाल देव(997-1005) की मुद्राएं फिर प्राप्त होनी शुरू हो जाती है |इससे जाहिर है कि वह चौहानों से मुक्ति पाकर स्वतंत्र शासक बन गया था |
- यह स्थिति दो तरह से पैदा हो सकती थी? सल्लक्षणपाल द्वारा चौहानों को हराने से या उत्तर-पश्चिम दिशा में तुर्कों के आक्रमण के भय से जो वातावरण पैदा हो गया था उसको दृष्टि में रखते हुए चौहान-तोमर मैत्री संधि द्वारा | किसी युद्ध का कहीं संकेत न मिलना दूसरी बात की संभावना को अधिक बल देता है |
- पंजाब के हिन्दुशाही राजा जयपाल के निमंत्रण पर बना प्रथम राजपूत ससंघ,जिसमें फरिश्ता के अनुसार दिल्ली और अजमेंर के शासक शामिल थे, ऐसी संधि के बाद ही अस्तित्व में आ सकता है |
- सल्लक्षणपाल के बाद समसामयिक दस्तावेजों से पता चलता है कि जयपाल(1005-1021) उसका उत्तराधिकारी बना | इसके समय तुर्क आक्रमण की बाढ़ ने हरियाणा को बुरी तरह डूबा डाला |

तुर्कों के आक्रमण

- तोमरों के शासनकाल में गजनी के शासक महमूद और उसके उत्तराधिकारी ने कई भंयकर आक्रमण किए | जिससे उनकी शक्ति बेहद क्षीण हो गई | लेकिन के पौत्र मादूद के समय तोमर शासक कुमारपाल(1021-1051) ने स्थिति को संभालने के प्रयत्न किए | उसने मादूद के आक्रमण की सूचना पाते ही उत्तरी भारत के शासकों से सहायता मांगी |
- सौभाग्यवश उसकी अपील कारगर सिद्ध हुई और उत्तरी भारत के बहुत से शासक मादूद से भिड़ने के लिए आ गए | सन् 1043 में थानेसर के स्थान पर अफमान और भारतीय सेनाओं की टक्कर हुई | बड़ा घमासान युद्ध हुआ,जिसमें विजय भारतीयों के हाथ लगी | कुमारपाल फिर स्वतंत्र हुआ |
- कुमारपालके बाद अनंगपाल दिवतीय गद्दी पर बैठा(1051) | वह अत्यंत पराक्रमी और सफल संगठनकर्ता था उसने काफी अर्से से उत्पीडित,गिरे-पड़े तोमर राज्य के बिखरे हुए सिरजे को केवल पुन : संभाला ही नहीं वरन उसे सृदृढ़ स्थिति भी प्रदान की |
- सेना को बढ़ाकर उसे अनुशसित किया,प्रशासन को उत्तम किया और आर्थिक स्थिति को उन्नत बनाया | उसकी ख्याति को सुनकर शुत्रओं के दिल दहल उठते थे,उसके रहते किसी की हिम्मत न हुई कि उसके राज्य की तरफ आँख उठाकर देखे | वह जीवनपर्यन्त स्वतंत्र शासक रहा- यह उसकी मुद्राओं से सिद्ध होता है |
- अनंगपाल ने अपनी राजधानी की दिशा को भी सूधार | कितने ही भवन,प्रासाद,किले,मन्दिर,विद्यालय आदि उसने बनवाएं | महरौली की लोहे की लार भी उसी ने दिल्ली में मंगा कर(1052ई.) गडवाई थी |
- दिल्ली से बाहर सूरजकुंड भी अनंगपाल ने बनवाया था | वह कुंड अब भी दर्शनीय है |
- अनंगपाल ने 1081ई. तक राज किया | पर उसके बाद उसका उत्तराधिकारी तेजपाल(1081-1105) बिल्कुल निकम्मा सिद्ध हुआ | तेजपाल के समय गजनी के शासक इब्राहिम ने उस पर आक्रमण किया |
- कायर तेजपाल ने विरोध करने की बजाय उसकी अधीनता स्वीकार कर ली |

चौहानों का अभ्युदय

- तोमर राज्य की बुरी दशा को देखकर राजस्थान की तरफ से यहां एक शक्ति ने अपना भाग्य आजमाना चाहा | वह शक्ति थी शाकंभरी के चौहान |
- यहां के शासक वीर थे और महत्त्वकांक्षी भी | 1139ई. के आस-पास चौहान नरेश अरुणराज,जिसने 'महाराजाधिराज परमेंश्वर श्री, की उपाधि धारण कर रखी थी,ने हरियाणा की तरफ अपनी सेनाओं का रूख मोड़ा |
- अजमेंर संग्रहालय में रखी एक चौहान प्रशस्ति के अनुसार 'अरुणराज' की सेनाओं ने यमुना के पानी को गंदला कर दिया |
- अरुणराज ने तोमर राज्य को समूल नष्ट नहीं किया, वरन् इसे अपने करद राज्य में परिवर्तित कर दिया | आंतरिक प्रशासन तोमरों के हाथों में ही रहा | इसका बुरा परिणाम निकला, क्योंकि जब भी तोमरों ने देखा कि चौहानों की स्थिति कमजोर है, वे स्वतंत्र होने की चेष्टा कर बैठते थे |
- इसलिए विग्रहराज चतुर्थ के राजकाल तक हम तोमर-चौहान संघर्ष का यदा-कदा फूट पड़ना देखते हैं | पर विग्रहराज चतुर्थ ने तोमरों को बुरी तरह पीटा तथा हांसी के प्रसिद्ध दुर्गों पर कब्जा करके उन्हें श्रीहीन कर दिया | परन्तु उसने भी यहां की व्यवस्था सुचारू रूप से अपने अधीन कर ली | उसने उन्हें समूल नष्ट नहीं किया- उनकी नाममात्र की सामंती बनी रहने दी |

भादानकों का उदय

- इस समय हरियाणा में एक अन्य छोटी-सी शक्ति ने भी काफी जोर पकड़ लिया था | यह शक्ति थी भादानक | जैसा कि ऊपर कह चुके हैं, हर्षोत्तर काल में हरियाणा में कई छोटी-छोटी शक्तियां उभर गई थीं | इनमें दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र के भादानक भी थे |
- महाभारत में उनका उल्लेख रोहतक-अग्रोहा (रोहीतक और आग्रेय) तथा घग्गर और सतलुज के बीच में स्थित मालव लोगों के साथ हुआ है | महाभारत के वनपर्व से पता चलता है कि नकुल ने इन्हें अपनी दिग्विजय के दौरान जीता था | इन भद्रों को वे रेवाड़ी-भिवानी (हरियाणा) क्षेत्र में रखते हैं |
- चौहान नरेश ने तोमरों को हरा कर भादानकों के क्षेत्र पर भी आक्रमण किया था |
- अरुणराज की सब लड़ाइयों का जिक्र उसके शिलालेख में वर्णित है | पर एक भी शिलालेख में भादानकों का नाम न आना यह दिखता है कि संभवतः अरुणराज से बिना लड़े ही भादानकों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी |
- अरुणराज के बाद चौहानों में राजगद्दी प्राप्त करने के लिए गृहयुद्ध हुआ | पितृघातक जगदेव तथा उसके भाई विग्रहराज में बड़ा भरी संघर्ष चला | सारे राज्य में इस समय अराजकता फ़ैल गई |संभवत: इसी अराजकता के फ़ैल जाने से भादानकों ने अपनी शक्ति बढ़ा ली | और चौहान राज्य के सामंत के रूप में रहने के बजाए स्वतंत्र शासक बन गए |
- फिर सं. 1208 वि.(1151 ई.०) में जब विग्रहराज चतुर्थ राजा बना तो उसने भादानकों पर आक्रमण किया तथा उन्हें पराजित किया | पर विग्रहराज ने भादानकों को राज्यच्युत नहीं किया वरन् अपने अधीन सामंत राजा रहने दिया |
- विग्रहराज चतुर्थ की मृत्यु के बाद एक बार फिर प्रशासकीय ढील का दौर चला | भादानक स्वतंत्र हो गए | पृथ्वीराज तृतीय वि.सं. 1234(1177 ई.) में गद्दी पर बैठने के लगभग तीन वर्ष बाद उनकी तरफ देखा |

पृथ्वीराज चौहान

- पृथ्वीराज की प्रारंभिक लड़ाइयों में अहीरवाल के भादानकों का नाम आता है | 1182 में पृथ्वीराज ने भादानकों पर आक्रमण किया | भादानक भी शक्तिशाली थे |
- हाथी-घोड़ों पर बैठ,अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हो उन्होंने पृथ्वीराज का बड़ी वीरता से डटकर मुकाबला किया | घमासान युद्ध हुआ | पर अंत में विजय पृथ्वीराज की हुई |
- इस बार पृथ्वीराज ने अपने पूर्वजों वाली गलती नहीं दोहराई | भादानकों को अपना सामंत-राजा न बनाकर उसने उनका राज्य छीनकर अपने राज्य में मिला लिया |
- इसके बाद इतिहास से भादानकों का नाम ही राजनैतिक तौर पर देखने में नहीं आता | पृथ्वीराज ने, इस प्रकार लगभग समस्त हरियाणा पर अपना वर्चस्व कायम कर लिया |

महमूद के आक्रमण

- दसवीं शती के अंतिम चरण में जबकि बगदाद के खलीफा की शक्ति क्षीण हो गई तो उसके एक आधिकारी सुबक्तगीन ने गजनी में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली | उस समय आधुनिक अफगानिस्तान में एक ब्राहमण वंश का राज था, जो शाही वंश के नाम से जाना जाता था | शाहियों ने पंजाब को भी अपने अधिकार में कर रखा था |
- दसवीं शती के अंत में सुबक्तगीन ने शाही राजा जयपाल को हराकर पेशावर तक का अधिकांश क्षेत्र अपने अधीन कर लिया | किन्तु उसके बाद शीघ्र ही(997ई.) की मृत्यु हो गई | उसका पुत्र महमूद उसकी जगह गद्दी पर बैठा |
- उस लालची व्यक्ति ने उत्तरी भारत पर 1000 से 1026 तक कई आक्रमण किए | उसका छठा आक्रमण तीर्थराज कुरुक्षेत्र पर था |
- उसका उद्देश्य थानेसर की असंख्य दौलत से अपने लालच की कभी न बुझने वाली प्यास को शांत करना था |
- जब पंजाब के शासक आनंदपाल को, जो महमूद को हारकर उसकी अधीनता स्वीकार कर चूका था, इस योजना का पता चला तो पवित्र कुरुक्षेत्र के लुटने की कल्पना से ही विचलित हो उठा और उसने अपने छोटे भाई को दो हजार घुड़सवारी के साथ एक प्रार्थना-पत्र देकर महमूद के पास भेजा |
- जब हरियाणा के शासक तोमर नरेश अजपाल(?) को महमूद के आक्रमण की सुचना मिली तो वह भी एक शक्तिशाली सेना के साथ उसे रोकने के लिए आगे बढ़ा | महमूद की सेना को उसने नारायणगढ़ में रोका |
- महमूद हरियाणा की सेना की चौकस चट्टान से टकरा कर थोड़े समय में ही भांप गया कि उसका क्या हश्र होने वाले है | अत: उसने अफगान सेना को वापस मोड़ दिया |
- पूरी तैयारी करके पांच वर्ष बाद वह पुन: हरियाणा में आ धमका | यह उसका हरियाणा पर दूसरा और सातवां आक्रमण था |
- तोमर नरेश अजपाल(?) ने शुत्र की शक्ति का सही जायजा लेते हुए उत्तरी भारत के हिन्दू शासकों के नाम पर मार्मिक अपील प्रसारित की और 'थानेसर के धर्मक्षेत्र को बचाने के लिए' उनसे सहायता मांगी |किन्तु किसी भी राजा ने तोमर नरेश की अपील पर ध्यान महीन दिया | हरियाणावासी अपनेसामथ्र्यानुसार, अकेले ही शुत्र से लड़े |
- अब के उस की सेना ऐसी शक्तिशाली थी कि उसे अकेला तोमर नरेश हरा नहीं सकता था-वह हार गया | महमूद की विजय हुई |
- विजयोन्मत महमूद ने दिल्ली पर आक्रमण करना चाहा था ,पर सिकंदर की सैनिकों की तरह उसके सैनिकों ने भी आगे बढ़ने से इंकार कर दिया | विवश होकर महमूद को वापस लौटना पड़ा | जाते-2 महमूद ने पंजाब की अपने राज्य में विलय की घोषणा कर दी,परन्तु हरियाणा को उसने यथावत् छोड़ दिया |

अन्य आक्रमण

- महमूद की मृत्यु के बाद उसके पुत्र उत्तराधिकारी मासूद(1030-14) ने हरियाणा पर अधिकार करने की योजना बनाई | वह कुरुक्षेत्र की तरफ से नहीं, थोडा ऊपर से यहां उतरा | उसका पहला आक्रमण हांसी पर हुआ | हांसी का दुर्ग काफी सुरक्षित था | हरियाणावी वीरता से लड़े और उसे हरा दिया |
- थोड़े दिन बाद उसने फिर आक्रमण करने की सोची | उसके सेनानायकों ने अपने आका की बात की पुष्टि नहीं की- संभवत: वे हरियाणा की वीर जनता से टकराने से कतराते थे |
- 1030 ई. में मासूद ने हांसी पर दूसरा आक्रमण किया | दोनों सेनाओं ने बड़ी वीरता से एक-दुसरे पर प्रहार किया | लगभग 12 दिन के खूनी संघर्ष के बाद अंतत: आक्रमणकारी मासूद विजयी हुआ |
-
- सोनीपत यह कब्जा थोड़े दिन ही टिक पाया | कुछ समय बाद मासूद की मृत्यु हो गई और उसके निर्बल उत्तराधिकारी मादूद के हाथों से यहां के लोगों ने मुक्ति प्राप्त कर ली |
- मादूद की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी इब्राहिम(1059-1109) ने हरियाणा पर पुन: आक्रमण किया | इस बार आक्रमणकारी बहुत बड़े दल-बल के साथ आया था | अब हरियाणा का तोमर शासक बिल्कुल गया-गुजरा सिद्ध हुआ | उसने अपने पूर्वजों द्वारा अपनाया गया मार्ग त्याग दिया और इब्राहिम के सम्मुख बिना लड़े ही

घुटने टेक दिए | और इस तरह हरियाणा प्रदेश गजनी राज्य का अंग बन गया |

विदेशी आक्रमणों का प्रभाव

- महमूद और उसके उत्तराधिकारी के आक्रमणों का सबसे पहला बुरा प्रभाव तो यह हुआ कि इस प्रदेश की बेशुमार धन और जन की हानि हई | यहां से असंख्य ऊंट,घोड़े,खच्चर आदि पर माल लादकर लुटेरे गजनी उठा ले गए | यही नहीं,असंख्य लोग भी गुलाम बनाकर ले जाए गए जिन्हें बाद में गजनी में बेच दिया गया |
- धन के आतिरिक्त यहां के मंदिरों को और भव्य भवनों को मिट्टी में मिला दिया जिससे न जाने कितनी कलाकृतियां नष्ट हो गई | थानेसर के मूल्यवान पुस्तकालय राख के ढेर बन गए |
- महमूद ने हरियाणा पर सीधा अधिकार नहीं किया | उसने पंजाब पर अधिकार जमाकर उसे सीमावर्ती अड्डा बना दिया था | इससे हरियाणा की सीमाएं शुत्र-प्रदेश से जा सटीं और सदियों की शांति भंग हो गई | इसका कुप्रभाव जन-जीवन के प्रत्येक पहलू पर पड़ा |
- व्यापार ठप्प हप गया | उद्योग बर्बाद हो गए और कृषि कार्य ढीला पड़ गया | भला जहां रात-दिन विदेशी हमलों का खतरा हो वहां ये कार्य सुचारू रूप से कैसे चल सकते है?
- पर इन आक्रमणों का एक अच्छा प्रभाव भी हुआ | यहां की जनता गहरी नींद से जग उठी | उन्हें पता चला कि वे अजेय नहीं हैं | स्वतंत्रता की हिफाजत केवल चौकसी से हो सकती है, सो कर नहीं,यह बात उनकी समझ आ गई |

मुहम्मद गौरी के आक्रमण

- अफगानिस्तान में गौर का छोटा-सा राज्य था | वहां का शासक मुयुद्दीन मुहम्मद गौरी था | वह पहले दर्जे का धुत,लालची,कट्टरपंथी और महत्त्वाकांक्षी था | उसने महमूद की तरह भारत पर कई आक्रमण किए | पहले उसने 1175 से 1186 तक कई बार प्रयासों से पंजाब को अपने अधीन के लिया | करनाल के निकट तरावड़ी के स्थान पर मोर्चाबंदी हुई |
- युद्ध बड़े ही पर प्रचंड रूप से शुरू हुआ | हरियाणा के गोविन्दराय की शूरवीरता अदिव्तीय थी-वह अति चतुर सेनानायक था | आज का युद्ध भी उसी के चारों तरफ घूम रहा था | मुहम्मद गौरी ने सीधे उसी पर प्रहार किया |
- गोविन्दराय गौरी के प्रहार से घायल हो गया, पर वीर राजपूत ने अपनी स्थिति की प्रवाह न करते हुए अपना स्वरूप पहले से भी अधिक तेजस्वी बना दिया | उसने अपना घोड़ा सीधा गौर के शासक पर चढ़ा दिया और उस पर ऐसा प्रबल प्रहार किया कि वह बुरी तरह से घायल हो गया | वह घोड़े से गिरने वाला ही था | वह घोड़े से गिरने वाला ही था कि एक खल्जी सरदार ने लपककर उसे संभाल लिया और उसे रणक्षेत्र से भगा ले गया |
- सुल्तान ने एक वर्ष तक भारत पर पुन: आक्रमण करने की पक्की तैयारी की, और जब उसने देखा कि सब बातें ठीक हो गई है तो उसे आक्रमण कर दिया | अब की बार भी (1192ई.) उसी जगह तरवड़ी में, पृथ्वीराज चौहान ने आक्रमणकारी को रोका |
- तरावड़ी के युद्ध ने चौहान नरेश के भाग्य फैसला के दिया,पर हरियाणा का नहीं, यहां की वीर जनता ने इस निर्णय को नहीं माना | युद्ध के बाद अफगानी सेना को जो कदम-2 पर प्रबल विरोध का सामना करना पड़ा उसका विवरण कई जगह मिलता है | इस विरोध कस सबसे खतरनाक रूप हांसी-हिसार क्षेत्र में देखने में आया | वहां के वीर जाटवां(राजपूत) सरदार के नेतृत्व में वीर जनता ने शुत्र को साहसपूर्ण चुनौती दी |
- सरदार युद्ध में मारा गया और सरदार के मरते ही उसकी सेना में भगदड़ मच गई | वे हार गए |
- हांसी के बाद सिरसा पर आक्रमण हुआ | वहां भी वीर जनता ने अफगान सेना का डटकर मुकाबला किया,पर विजय यहां भी अफगानों के हाथ ही लगी | इसके बाद महम,रोहतक आदि स्थानों पर भी ऐसी ही घटनाएं घटी | परन्तु विरोध के बाद अफगान सेना को हर जगह सफलता प्राप्त हुई |
- लेकिन अहीरवाल में ऐसा नहीं हुआ | वहां की वीर जनता ने रेवाड़ी के राज्यपाल तेजपाल(?) के नेतृत्व में शुत्र के छक्के छुड़ा दिए | जमकर युद्ध हुआ जिसमें अफगान सेनापति इब्राहिम बाहरहजारी को रेवाड़ी के तालाब के किनारे मौत के घाट उतार दिया गया |

- अफगान सेना हार गई | जब यह 'बुरी खबर' गौरी के प्रधान सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को मिली तो वह बड़ा दु:खी हुआ और विशाल सेना लेकर रेवाड़ी पर आक्रमण कर दिया | इस बार भी जमकर युद्ध हुआ, पर तेजपाल(?) की सेना को हार का मुह देखना पड़ा |
- अहीरवाल की तरह मेवात क्षेत्र में भी अफगान सेना का अच्छा-खासा से डटकर लोग लिया | शुत्र-सेना पर मेंवातियों ने बड़ी तीखी मार डाली | मेंवातियों ने उसके सेनापति बजहुद्दीन को मौत के घाट उतार दिया | उसकी सेना भग गई |
- रेवाड़ी की तरह ही मेवात में भी ऐबक ने एक बहुत बड़ी सेना भेजकर हार का बदला लिया | वीरवर हेमराज युद्ध करते हुए मारा गया और सैकड़ों मेंवाती भी वीरगति को प्राप्त हुए |

दास वंश

- मुहम्मद गौरी का 1206 में देहांत हो गया | उसके विश्वस्त जनरल कुतुबुद्दीन ऐबक ने इस स्थिति का पूरा-2 लाभ उठाया:लाहौर के स्थान पर जुलाई 1206 को उसने आपको भारत का सुल्तान घोषित करके तुर्क-अफगान राज की यहां नींव डाल दी | हरियाणा भी उसके नए राज्य का एक अंग बना |
- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद(1210), जब इल्तुतमिश गद्दी पर बैठा तो हरियाणा की व्यवस्था समय के लिए गडबडा गई | इसका प्रमुख कारण था पंजाब के प्रशासक कुबाचा आदि विद्रोह | कुबाचा ने सिरसा के आस-पास काफी इलाका अपने अधीन कर लिया था | वह काफी शक्तिशाली सरदार था |
- 1227 में उसने सिरसा के आस-पास का क्षेत्र हथियाकर अपनी स्वतंत्र सत्ता का एलान कर दिया |सुल्तान ने तत्काल उसकी चुनौती को स्वीकार करते हुए सिरसा पर आक्रमण कर दिया | जम कर युद्ध हुआ, जिसमें कुबाचा हार गया |
- इल्तुतमिश के बाद रुकनुद्दीन(अप्रैल-नवम्बर 1236) सुल्तान बना | इसका कार्यकाल काफी छोटा था | यह अत्यंत निकम्मा और आलसी व्यक्ति था |
- तत्कालीन स्थिति का लाभ उठाते हुए,कई सरदारों ने विद्रोह कर दिया | इनमें हांसी का मुक्ती सैफुद्दीन कूची का विद्रोह काफी जोरदार था | तरवड़ी के पास भी इसी समय कुछ अन्य अमीरों ने भी बगावत कर दी | सुल्तान सेना लेकर स्थिति पर काबू पाने के लिए देहली से बाहर निकाला तो इल्तुतमिश की योग्य पुत्री रजिया ने गद्दी पर कब्जा करके सल्तनत की मल्लिका बन गई |
- रजिया ने विद्राही जनता और बागी अमीरों से निपटने की कोशिश की, कैथल के स्थान पर वह अपनी जान ही गवां बैठी(1240)|
- रजिया के बाद आने वाले दो शासक ,बहराम(1240-42) भी राजनैतिक अफरातफरी के वातावरण में रहें | हरियाणा के लगभग सब इक्ते इस समय पूरी तरह स्वतंत्र रहे और मनमाने ढंग से काम करते रहे |
- पर तीसरे शासक नासिरुद्दीन महमूद ने(1246-66) ने गद्दी पर बैठते ही नकेल की कोशिश की | उसने हांसी को शक्तिशाली मुक्ती बलबन सरीखे व्यक्ति पर भी हाथ डालने में आनाकानी नहीं की | लेकिन इसी समय मेंवात की वीर प्रजा भड़क उठी | लाचार होकर सुल्तान को मुक्ती बलबन को सम्मुख घुटने टेकने पड़े |
- बलबन ने मेंवात को संभालने के प्रयत्न किए,पर सफलता उसे तब मिली जब नासिसरुद्दीन के बाद वह स्वयं दिल्ली का सुल्तान बन गया |

खल्जी वंश

- बलबन के उत्तराधिकारी अयोग्य सिद्ध हुए और 1290 में एक खल्जीसरदार, जलालुद्दीन ने उनसे सत्ता छीनकर खल्जी वंश के हाथों में दिल्ली राज्य की बागडोर थमा दी | जलालुद्दीन ने कोई छह वर्ष राज किया | उसके समय की कोई विषय राजनैतिक घटना,जिसने हरियाणा को प्रभावित किया हो, समसामयिक साहित्य में देखने में नही आती |
- इसी प्रकार अलाउद्दीन खल्जी(1296-1316) के राजकाल में भी कोई विशेष उल्लेखनीय घटना नही घटी |
- अलाउद्दीन के अयोग्य उत्तराधिकारी यहां के शासनतंत्र को ठीक प्रकार से नही चला सके | उसके अधीन लगभग सब इक्तेदार खुदमुखित्यार हो गए | दिपालपुर (पंजाब) का हाकिम गाजी मलिक तो सिरसा तक बिना रोक-टोक के बढ़

आया था, सुल्तानी सेना ने उसे रोकने का प्रयत्न किया,पर हार गई |

तुगलक वंश

- गाजी मलिक ने एक डग और भरी और गयासुद्दीन तुगलक का नाम धारण क्रेक दिल्ली का पहला तुगलक सुल्तान बना | उसने हरियाणा प्रदेश पर विशेष ध्यान दिया | उसने प्रशासन के मौलिक ढांचे में कोई परिवर्तन नहीं किया | न ही उसके उत्तराधिकारी मुहम्मद तुगलक(1325-51) ने ऐसा कोई कदम उठाया-उसने भी स्थिति को पूर्ववत् बना रहने दिया |
- मुहम्मद तुगलक के उत्तराधिकारी फिरोजशाह तुगलक ने प्रशासन में थोड़ी फेर-बदल की | वास्तव में फिरोज को हरियाणा क्षेत्र बहुत ही पंसद था |फिरोज के बाद अबुबक्र(1389-90) ने अपनी छोटी-सी अवधि में यहां कोई प्रशासनिक फेर-बदल नहीं की | पर हां,उसके उत्तराधिकारी-महमूद नासिरुद्दीन(1394-1412) ने कुछ परिवर्तन किए | उसके समय यहां राजनैतिक रूप से अस्थिरता ही रही | सब तरफ अराजकता का आलम बरपा था |
- इसी समय तैमूर ने भारत पर आक्रमण कर दिया (1398) | इसने स्थिति को और भी खराब कर दिया |

तैमूर का आक्रमण

- समरकंद शासक तैमूर ने 1398 ई. में भारत पर आक्रमण किया | विद्युत् गति से चलकर,अफगानिस्तान आदि प्रदेशों को जीतकर वह सिंधु नदी को पर करके पंजाब में आ धमका | वहां से वह राजस्थान की ओर मुड़ा जहां कहीं भी उसे संगठित सेनाओं का विरोध नहीं करना पड़ा |
- तैमूर विजयी होकर घग्घर के साथ-2 हरियाणा में प्रविष्ट हुआ | यहां रानिय गाँव के पास एक झील के किनारे उसने अपना पड़ाव डाला | सारा दिन विश्राम करने के बाद वह सिरसा से 12 मील दूर फिरोजबाद-हरणीखेड़ा होता हुआ बिना किसी विरोध के गाँवों को लुटता-उजाड़ता सिरसा पहुंच गया | सिरसा के लोग आक्रमणकारी के आने की सुचना पाते ही अपने घरों को छोड़कर भाग खड़े हुए |
- तैमूर के घुड़सवार उनके पीछे लग गए और उन्होंने हजारों लोगों का वध करके उसकी स्त्रियों और बच्चों को बंदी बना लिया | यहां से बेशुमार संपत्ति तैमूर के हाथ लगी | कुछ दिन सिरसा में रोकने के बाद तैमूर फतेहाबाद की ओर चल दिया |
- फतेहाबाद के लोग तैमूर की सेना को देखकर समीप के जंगल में भाग गए | यहां तैमूर के सैनिकों के हाथ जो भी लगे,उन्हें कत्ल कर दिया | नगर की पुश संपत्ति,अन्न और धन बुरी तरह लुटा गया |
- फतेहाबाद से चलकर रज्ज्र्बपुर के किले को पार करते हुए तैमूर अहरोनी कस्बे में पहुंचा | यहां अहीरों की आबादी थी ' जो अपने आपको यदुवंशी क्षत्रिय मानते थे | उन्होंने तैमूर का विरोध किया,परन्तु पराजित हो गए |
- अहरोनी से आगे चलकर तैमूर टोहाना पहुंचा | टोहाना के क्षेत्र में जाटों की आबादी थी | जोतों ने तैमूर को रोकने प्रयास किया | टोहाना के पास घमासान युद्ध हुआ | तैमूर कई जनरल एक साथ मिलकर उनसे लड़े | जाट तैमूर की भारी सेना का मुकाबला न कर सके | यहां से घग्घर के साथ-2 तैमूर समाना पहुंचा | कोटिल के पास उसने घग्घर का पुल पार किया यहां पर उसके सेनापति,जिन्हें वह काबुल के रास्ते से भारत में आने के लिए छोड़ आया था,आ मिले |
- हिसार के बाद तैमूर करनाल में प्रविष्ट हुआ | कैथल, असन्ध, तुगलकपुर, सालवन आदि को बर्बाद करता हुआ 3 दिसंबर 1398 को वह पानीपत में पहुंचा | मार्ग में जितने गांव पड़े उन्हें उस बर्बर आक्रमणकारी ने उजाड़ दिया | पानीपत के लोग दिल्ली सरकार के आदेशानुसार नगर छोड़कर चले गए | तैमूर ने नगर को जी भर कर लूटा |
- अगले दिन पानीपत से चलकर उसने यमुना नदी के किनारे, नगर से 6 मील दूर कैम्प लगाया | संभवतः यह यमुना नदी की कोई छोटी शाखा थी जो पानीपत के पास में बहती थी | फिर वह बल्ला पहुंचा | यहां उसने कई दिशाओं में सैनिक भेजे ताकि राशन आदि प्राप्त हो सके | ऐसा करके एक सप्ताह में उसने पर्याप्त अन्न इकट्ठा कर लिया |

- इसके बाद उसने दिल्ली पर आक्रमण किया और वहां के शासक महमूद को 16 दिसंबर 1398 ई. को पराजित किया |

सैयद वंश

- इस अफरातफरी का लाभ एक सैयद वंश सरदार खिज्रखां ने उठाया | लंगड़े तैमूर का वह यहां सहायक पैर साबित हुआ | जहां तक प्रशासन का सवाल है, उसने पुराने ढांचे को ही बरकरार रखा | और ऐसा ही उसके उत्तराधिकारी,मुबारकशाह(1421-43) के समय में रहा |
- 1433 के बाद उसके उत्तराधिकारी मुहम्मदशाह(1434-43) | उसके समय की किसी खास राजनैतिक घटना को कोई चर्चा नहीं है |

लोदी वंश

- सन् 1451 में लोदी सरदार,बहलोल ने सैयदों के कमजोर हाथों से सत्ता छीन कर हरियाणा पर अपना प्रभुत्व कायम कर लिया | उसने 1451 से 1489 तक राज किया |
- उसके समय में यहां की प्रजा ने कई बार स्वतंत्र होने का प्रयास किए,जिनकी चर्चा अलग से की जा रही है | साथ ही उस समय कुछ मुक्तियों ने भी बगावत का झंडा बुलंद कर दिया | राजकुमार निजमखां ने इन विद्रोहों को दबाया | आगे चलकर यही विजयी राजकुमार बाद में सिकंदर लोदी के नाम से सुल्तान बना |
- हरियाणा की जनता सिकंदर से प्रसन्न न थी क्योंकि वह धार्मिक रूप से कुछ पक्षपाती था | इसीलिए कई जगह जन आक्रोश और बगावतों के दर्शन भी होते है|
- सिकंदर के बाद इब्राहिम शासक बना(1517-26)| न उसके सगे-सबंधी उससे प्रसन्न थे, न भाई-बांधव | आमिर-उमरा भी उखड़े रहते थे | उसने कुछ भाइयों को लंबे अर्से तक हांसी के किले में कैद किए रखा और कितने ही अमीरों से कठोर व्यवहार किया |

बाबर का आक्रमण

- बाबर ने इन परिस्थितियों का पूरा लाभ उठाते हुए भारत पर कई आक्रमण किए | पर उसका 1526 का आक्रमण बड़ा ही प्रबल था | इसी आक्रमण के दौरान वह हरियाणा में प्रविष्ट हुआ था |
- जब सुलतान इब्राहिम लोदी को बाबर के आक्रमण की खबर मिली तो वह भी एक विशाल सेना-संख्या लगभग एक लाख-लेकर उस रोकने के लिए आगे बढ़ा |इसके अतिरिक्त, उसकी सहायता के लिए हरियाणा से दो सेनाएं और आईं - एक मेंवात के सरदार हसनखां मेंवाती की और दूसरी हिसार के फौजदार हमीद खां की |हमीद की सेना बड़ी ही 'भयंकर आफत'मानी जाती थी |उसमें अधिकांशत: हरियाणवी सैनिक थे |
- बाबर को इब्राहिम और हमीदखां की इन दोनों सेनाओं से एक साथ लड़ने में भलाई नजर नहीं आई | अत: हमीद को रोकने के लिए उसने राजकुमार हुमायूं को भेजा | हमीद की सेना ने हुमायूं के इस दस्ते को बड़ी आसानी से भगा दिया | इसके कुछ समय बाद उसकी खास सेना से मुठभेड़ हुई | बड़ा जमकर युद्ध हुआ, लेकिन अब मैदान हुमायूं के हाथ रहा | सुल्तानी सेना भाग खड़ी हुई और मुगलों का हिसार पर आसानी से कब्जा हो गया |

पानीपत का युद्ध

- बाबर को इब्राहिम की सेनाओं से टक्कर लेने के लिए पानीपत का मैदान बड़ा उपयुक्त लगा | अत: वहां पहुंचकर उसने 12 अप्रैल 1526 ई. को अपने मोर्चे बनाने का आरंभ कर दिए | उसके पड़ाव की दाहिनी ओर तो पानीपत का नगर था और बाईं ओर को सुरक्षित करने के लिए खाइयां खुदवाकर उनके ऊपर वृक्ष कटवा कर गिरवा दिये |
- मध्य में उसने 700 छकड़े खड़े करवाकर उन्हें परस्पर गीले चमड़े की रस्सियों से बंधवा दिया | इन छकड़ों को जरूरत पड़ने पर आगे-पीछे किया जा सकता था | उनके पीछे उसने छ:-सात मोर्चे खुदवाकर तोपें रखवा दीं| इसके अतिरिक्त, उसने अपनी सेना के दाहिने तथा बाएं पक्षों के साथ दूर, दोनों और 'तुलगमा' पार्टियां खड़ी कर दी थीं | ये पार्टियां शत्रु की नजरों से परे पड़ती थी |
- पानीपत के समरांगण में आठ दिन तक दोनों सेनाएं एक दूसरे के आमने-सामने खड़ी रहीं | किंतु किसी ने भी एक दूसरे पर धावा बोलने की हिम्मत नहीं की | अंत में 21 अप्रैल, 1526 ई. को बाबर ने अपने सैनिकों को शत्रु के विरुद्ध लड़ने क़ा आदेश दिया | शीघ्र ही बड़ा भयानक संग्राम छिड़ गया | बाबर के चतुर दांव-पेंच, रिसाले और

तोपखाने की मार से अफगान सेना में निराशाजनक भगदड़ मच गई | दोपहर तक इब्राहिम की सेना पूर्णतया हार गई | इब्राहिम स्वयं भी युद्धभूमि में मारा गया |

अन्य विरोध

- मेंवात में हसनखां मेंवाती समस्त अशांति एवं विद्रोह का नेता था | हिसार के आसपास के अफगान सरदारों ने भी ऐसा ही किया | इन अफगानों का नेता हमीदखां सारंगवानी था | बाबर ने इन्हें दबाने के लिए 21 नवंबर 1526 को एक बड़ी सेना भेजी | अफगान तो तैयार ही थे | दोनों सेनाओं की हिसार के पास जबरदस्त टक्कर हुई जिसमें अफगानों की हार हुई | अब हिसार क्षेत्र पूर्णतया शांत था |
- पर मेंवात अब भी धधक रहा था | इसके बाद बाबर ने मेंवात की तरफ देखा पानीपत के युद्ध में मेंवात के सरदार हसन खां मेंवाती का पुत्र नाहर खां बाबर ने कैद कर लिया था | बाबर ने उसके पुत्र को छोड़ दिया | उसने ऐसा करते समय सोचा था कि कृतज्ञ बाप इससे उससे मिल जाएगा, पर हुआ इससे विपरीत | वह चितौड़ के राजा संग्रामसिंह (राणा सांगा) के साथ मिल गया |
- 17मार्च 1527 को हसन खां ने हजारों मेंवातियों के साथ खानवा में बाबर से भयंकर युद्ध किया | मैदान बाबर के हाथ रहा और हसन खां तथा उसके साथी लड़ते हुए मारे गए |
- खानवा के युद्ध बाबर ने मेंवात पर चढ़ाई की और इसे पूर्णत: अपने अधिकार में कर लिया |

बाबरी प्रशासकीय व्यवस्था

- हरियाणा के नवविजित पदेश के प्रशासन को ठीक प्रकार से चलाने के लिए बाबर ने इसे चार सरकारों में बांट दिया-
    1. दिल्ली
    2. मेंवात
    3. हिसार और
    4. सरहिंद|

  इसके अतिरिक्त उसने अपने दो विश्वस्त सरदारों,अहसान तैमूर और बुगरा सुल्तान को क्रमश: नारनौल समसाबाद की जागीरों प्रदान कीं |
- इनमें सबसे भयानक विद्रोह सन् 1530 ई. में कैथल में हुआ वहीं के मंढार राजपूतों ने अपने नेता मोहनसिंह के नेतृत्व में संगठित होकर स्थानीय व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दिया | बाबर ने 'बागी मंढ़ारों' को पाठ पढ़ाने के लिए सरहिंदके गर्वनर अलीकुली हमदान को 3000 सैनिकों के साथ भेजा | बहादुर मंढारों ने मुगल सेना को देखते ही देखते पीट दिया | जब पराजय का समाचार बाबर को मिला तो वह बड़ा दुखी हुआ और उसने एक विशाल सेना 'विद्रोहियों' को पराजित करने के लिए भेजी | इस बार भी बड़ा मंढार बड़ी वीरता से लड़ें,किन्तु विशाल मुगल सेना के सामने हार गए |

हुमायूं का राजकाल

- इस विजय के थोड़े समय बाद 26 दिसम्बर 1530 को बाबर की मृत्यु हो गई | बाबर के बाद उसका पुत्र हुमायूं गद्दी पर बैठा | नए शासक ने हरियाणा के प्रशासन को यथावत् बना रहने दिया | हां,उसने यहां की सरकारों का इंतजाम करने में अपनी तरफ से काफी चुतराई दिखाई | उसने अपने भाई-बांधव तथा चहेते सरदारों को यहां हाकिम नियुक्त कर दिया | लेकिन उसका भाग्य देखिए जिनके साथ जिनके साथ भलाई की थी उन्होंने बुरे दिनों में उसकी मदद नहीं की और इसलिए 1540 में वह अपना सारा राज्य,जिसमें हरियाणा प्रदेश भी था,सूर वंशीय शूत्र शेरशाह के हाथों गंवा बैठा |

शेरशाह सूरी का शासन

- शेरशाह का हरियाणा प्रदेश से पुराना संबंध था | उस का दादा इब्राहिम सूरी,जो कि पेशावर के निकट का रहने वाला था, सुल्तान बहलोल लोदी के राजकाल में भारत आया था | अपने गुजरे के लिए पहले हिसार के जागीरदार के पास नौकरी की | उस जागीदार ने उसे 40 सिपिहियों का सरदार बनाकर नारनौल के परगने में गुजारे के लिए छोटी सी जागीर दे दी |
- यहीं नारनौल के स्थान पर इब्राहिम के पुत्र हसन के घर सन् 1486 ई. में शेरशाह का जन्म हुआ था | शेरशाह का बचपन का नाम फरीद था | थोड़े समय के पश्चात् शेरशाह अपनी असाधारण योग्यता के आधार पर एक छोटे सैनिक से उन्नति करके बिहार का शासक बन गया | उसने 1540 ई. में हुमायूं को हराकर दिल्ली तथा हरियाणा पर भी अधिकार कर लिया |

- शेरशाह ने हरियाणा के शासन प्रबंध में विशेष रूचि ली, क्योंकि हरियाणा शेरशाह की अपनी जन्मभूमि थी, उसने सारे प्रदेश को पूर्ववत् चार सरकारों दिल्ली,मेंवात,हिसार और सर हिंद में विभाजित कर दिया |
- उसने प्रत्येक सरकार का शासन प्रबंध मुख्यतः दो अधिकारीयों के हाथ में रखा, जिन्हें शिकदार और मुख्य मुंसिफ कहते थे | मुख्य वस्तुत: सैनिक अधिकारी होता था | उसके पास 2000 से 5000 तक सैनिक होते थे |
- इसका मुख्य कार्य सरकार में शांति व्यवस्थ कायम रखना उर राजद्रोहीयों को दबाना था उसका काम फौजदारी के मुकदमों का फैसला करना भी था | दुसरे, मुख्य मुंसिफ सामान्य रूप से न्यायाधीश होता था, जिसका मुख्य कार्य दीवानी मुकद्दमों का निर्णय करना था |
- उसने प्रत्येक सरकार कोआगे चलकर परगनों में बांटा | प्रत्येक परगने की व्यवस्था के लिए शिकदार नियुक्त किए | यह सैन्य अधिकारी होता था, जो कि परगने में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए उत्तरदायी था | इसके अतिरिक्त,इसके अन्य कार्य बादशाह के फरमानों को लागू करना था |
- दूसरा अधिकारी मुंसिफ था | यह परगने का वित्त अथवा लगान संबंधी कार्यो का अधिकारी होता था | वह अपने अधीन कर्मचारियों की देखभाल भी करता था और दीवानी मुकदमों का फैसला भी करता था |
- तीसरे,कानूनगो थे | किसानों की सुविधा के लिए दो कारकून होते थे जो फारसी तथा हिंदी में भूमि संबंधी सारे रिकार्ड रखते थे | इनके आलावा एक अधिकारी खजांची कहलाता था | वह परगने का कोषाध्यक्ष होता था |
- शासन की सबसे छोटी तथा अंतिम इकाई ग्राम होती थी ग्राम प्रबंध पंचायत करती थी,मुकद्दम जंव का मुखिया होता था | वह लगान इकट्ठा करता था तथा चौकीदार की सहायता से कानून और व्यवस्था कायम रखता था | पटवारी ग्राम के भूमि संबंधी रिकार्ड भी रखता था |
- शेरशाह ने हरियाणा के कृषकों की स्थिति को अन्य जगह के किसानों की तरह,उत्तम बनाने के लिए बहुत से सुधर किए | सर्वप्रथम,उसने कृषि योग्य भूमि की पैमाइश करवाई | भूमि मापने के लिए उसने सिकंदर लोदी के समय के 32 अंगुल के गज का प्रयोग किया |
- दुसरे,उसने भूमि की उपज को मापने का निश्चत किया,ताकि वह राज्य के राजस्व का भाग ठीक-2 निश्चित कर सके | इसके लिए उसने जमीन को तीन वर्गो-ऊतम,मध्यम,निम्न में बांट दिया | इन तीनों की उपज की औसत निकाल ली जाती थी, और उसकी के आधार पर सरकार अपना भाग ले लेती थी |
- दुर्भाग्य से शेरशाह अधिक दिन तक राज-सुख नहीं भोग सका | और सन् 1545 ई. में युद्ध के एमी,कालिंजर के स्थान पर एक सुरंग फटने से वह मारा गया |
- दुर्भाग्यवश उसके उत्तराधिकारी इस्लाम शाह(1545-53) तथा आदिल शाह(1553-55),बिल्कुल अयोग्य सिद्ध हुए और उनके राजकाल में यहां का प्रशासन बड़े ढीले से चला | चारों तरफ अव्यवस्था व अराजकता का बोलबाला हो गया |

मुगलों का पुर्नागमन

- इस स्थिति का बादशाह हुमायूं ने पूरा-पूरा लाभ उठाया | सन् 1540 में जिस राज्य से वह हाथ धो बैठा था, वह उसने 15 वर्ष बाद फिर से प्राप्त कर लिया | और इस प्रकार एक बार फिर दिल्ली और हरियाणा पर मुगल पताका फहरा उठी |परन्तु भाग्य ने हुमायूं का साथ नही दिया और वह राज्य पुन: प्राप्त करने के थोड़े दिन बाद ही 26 जनवरी 1556 को अपने पुस्तकालय की छत से गिरकर कालग्रस्त हो गया |
- हुमायूं का पुत्र अबकर उस समय सुदूर पंजाब में था | उसके सरंक्षक बैरमखां ने 14 फरवरी 1556को कलानौर(पंजाब) में ई टों का चूबतरा बनाकर अकबर का राज्यभिषेक कर दिया | इस समय उसकी आयु 13 वर्ष से कुछ अधिक थी और वह चारों ओर से शुत्रओं से घिरा हुआ था | उसके शुत्रओं में सबसे खतरनाक सुरों की नौका का प्रधान खिवैया हमेचन्द्र था |

हमंचन्द्र (हेमू)

- हमेंचन्द्र, जो मध्यकाल के इतिहास में हेमू के छोटे नाम से प्रसिद्ध है, हरियाणा की प्रमुख नगरी रेवाड़ी का रहने वाला था | उसके पिता की

आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी | जिसके कारण उसे छोटी अवस्था में ही घर का काम करना पड़ा | पर समकालीन इतिहासकार इस बात से सहमत है कि हेमू बहुत चतुर व्यक्ति था | और अत्यधिक परिक्ष्मी भी |

- छोटी अवस्था में ही हेमू ने रेवाड़ी छोड़कर सुर शासकों के अधीन सरकारी नौकरी कर ली थी | पहले वह सरकारी फेरी वाला बना थोड़े समय शाही ठेकेदार और फिर शाहनगा-ए-बाजार बन गया | सारे राज्य के बाजारों की व्यवस्था करता था | सुर शासक इस्लामशाह केवल व्यापारिक मामले पर ही नहीं वरन राज्य के दुसरे मामलों पर भी हेमू के साथ विचार-विमर्श किया करता था |
- इस्लामशाह की मृत्यु(30 अक्तूबर,1553ई.) के पश्चात् मुबरिजखां,आदिलशाह के नाम से बादशाह बना | हेमू ने आदिलशाह पर भी अपने व्यक्तित्व की गहरी छाप लगा दी | आदिल भी राज्य का कोई भी काम बगैर हेमू से सलाह मशविरा किए नहीं करता था |
- थोड़े समय बाद में वह प्रधानमंत्री बन गया | प्रधानमंत्री बनते ही हेमू ने 'सब पदों पर नियुक्तियां करने की, अयोग्य अधिकारीयों को पदच्युत करने की तथा न्याय वितरण आदि की सब जिम्मेदारियों खुद संभाल ली | वह सेनापति भी बन गया |
- हुमायूं की मृत्यु के पश्चात् दिल्ली के खाली सिंहासन पर कब्जा करने के लिए सुर शासक आदिलशाह ने हेमू को भेजा | इटावा,कालपी होता हुआ हेमू आगरा की ओर बढ़ा | यहां उसकी टक्कर मुगल गवर्नर सिकंदर उजबेक से होनी थी , किन्तु वह हेमू का नाम सुनते ही इतना भयभीत हुआ कि उसके आने से पहले ही भाग खड़ा हुआ | हेमू ने आसानी से आगरे पर अधिकार कर लिया |
- इसके बाद देहली की ओर बढ़ा | 7 अक्टूबर 1556 ई. को दोनों सेनाओं का आमना सामना हुआ | आक्रमण को पहल मुगल सेना द्वारा हुई | लेकिन हेमू ने अपना बचाव करते हुए मुगलों को वह उत्तर दिया कि उनके होश उड़ गए | वह मगलों के प्रधान सेनापति तारदीबेग की तरफ बढ़ा | तारदीबेग खां पर सीधा हमला बोल दिया |तारदीबेग उसके भीषण वार को नही सह सका और उसकी सेना एकदम बिखर गई | फिर तो हेमू की सेना मुगल सेना मुगल सेना पर टूट पड़ी | मुगल सेना भाग खड़ी हुई | हेमू ने भागती मुगल सेना के 160 हाथी,1000 अरबी घोड़े और अनंत धनराशि अपने अधिकार में ले ली | हेमू पूर्णत दिल्ली नगर में प्रविष्ट हुआ |
- दिल्ली में प्रविष्ट होते ही हेमू ने अपनी सोचने की धरा को बदल दिया अफगान सेना इसके इशारों पर नाचती थी, उसका मालिक आदिल बड़ा निर्बल तथा अयोग्य था, इसलिए ऐसे आदमी के लिए इतना कुछ करना उसे उचित नहीं लगा | 'वह क्यों,मै क्यों नहीं' सोचते हुए उसने इतिहास के रुख को अपनी ओर मोड़ दिया-
- शाहों छत्र के नीचे बैठकर हेमचन्द्र ने अपने आपको महाराजा'विक्रमादित्य' की उपाधि से विभूषित करके वह भारत सम्राट बन गया | हेमू ने राजा बनते ही विजित प्रदेशों के प्रशासन को ठीक रूप से चलाने के लिए कदम उठाए | उसने दूर के प्रदेशों पर गवर्नर नियुक्त किए तथा देहली और इसके आसपास के क्षेत्र पर,विशेषत:हरियाणा प्रदेश पर अपना सीधा नियंत्रण लागू किया |

पानीपत की दूसरी लड़ाई

- दोनों सेनाओं की पानीपत के इतिहास प्रसिद्ध समरांण में मुठभेड़ हुई |
- युद्ध का पलड़ा हेमू की तरफ भारी बैठने लगा और थोड़ी ही देर बाद में उसकी जीत निश्चित हो गई | लेकिन उसकी समय अचानक एक तीर हेमू की आंख में लगा जो कि पुतली को छेदता हुआ सिर के नीचे की तरफ निकल गया और वह मुर्छित हो गया | और मुगल सेना के हाथों मारा गया |

अकबर का प्रशासन

- अकबर ने हरियाणा प्रदेश की प्रशासकीय व्यवस्था में गहरी दिलचस्पी ली | उसकी यह व्यवस्था काफी हद तक शेरशाह की व्यवस्था से मिलती-जुलती थी | इसका ढांचा इस प्रकार था :

↓

केंद्र(प्रशासक:बादशाह)

↓

सूबा(प्रशासक:सूबेदार)

↓

सरकार(प्रशासक:फौजदार)

↓

परगना(प्रशासक:शिकदार)

↓

गांव(परंपरागत प्रशासन)

- प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी बादशाह स्वयं था | उसके अधिकारी व शक्तियां असीमित,मौलिक और अविभाज्य थीं | परन्तु सम्राट निरंकुश होते हुए भी प्रजा के हित का सदा ध्यान रखता था | बादशाह ने अपनी सहायता के लिए कुछ मंत्री नियुक्त किए हुए थे |
- **स्थानीय प्रशासन:** शासन प्रबंध को सुचारू रूप से चलाने के लिए अकबर ने अपने साम्राज्य को कई प्रातों में विभक्त किया हुआ था | सन् 1602 में उसके प्रांतों की सख्या 15 थी | हरियाणा का बहुत भाग दिल्ली सूबे में था | कुछ भाग आगरा के अंतर्गत भी था | प्रत्येक प्रांत में एक सूबेदार तथा अन्य कई कर्मचारी थे,जैसे दीवान,बख्यी,सदर काजी,वकियांविस,कोतवाल आदि |
- प्रांत आगे चलकर सरकारों में बंटे हुए थे और सरकार परगनों में | सरकारों को आज कल के जिले मान सकते है | सरकार के हाकिम को फौजदार कहते थे,जिसे पुराने समय के मुक्ती जैसी शक्तियां प्राप्त थी | फौजदार की सहायता के लिए बहुत कर्मचारी होते थे जिनमें मुख्य थे : मालगुजार,खजनेदार आदि |
- सरकार परगनों में बंटी हुई थी | परगने को हम आजकल की तहसीलों की तरह ही ले सकते है | परगने के मुख्याधिकारी को शिकदार कहते थे | वह कई अधिकारियों की सहायता से परगने की व्यवस्था करता था | इन अधिकारीयों में मुख्य थे:आमल,कानूनगो आदि |
- शासन प्रबंध की सबसे छोटी इकाई गांव थी इसका प्रबंध मुकद्दम तथा पंचायतें करती थीं | मुकद्दम गांव थी | मुकद्दम गांव का भूमि कर उगाहता था तथा चौकीदारों की सहायता से शांति कायम करता था | पंचायतें,जिसमें गांव के कुछ प्रभावशाली तथा बुद्धिमान व्यक्ति सम्मिलित होते थे,अनेक काम करती थी,जैसे गांव की सफाई व शिक्षा का प्रबंध करना,छोटे-2 आपसी झगड़ों का निर्णय करना,लोगों की आर्थिक उन्नति करना,मेंलों तथा त्योहारों का प्रबंध करना आदि |

भूमि कर व्यवस्था

- प्रजा हितैषी अकबर ने जन-कल्याण के लिए अनेक कार्य किए,लेकिन उसकी सबसे महान् देन उसकी भूमि कर व्यवस्था थी | अकबर ने शेरशाह की राजस्व प्रणाली का पुनर्गठन करके उसे वैज्ञानिक तथा सुसंगठित रूप प्रदान किया | उसे मुजफ्फर खां तथा टोडरमल की सहायता से 1570 ई. से 1580 ई. तक कोई दस वर्षो के अथक परिश्रम के बाद एक प्रशंसनीय भूमिकर प्रणाली की स्थापना की जिसे 'जब्ती प्रणाली' अथवा 'टोडरमल का बंदोबस्त कहा जाता है कई लोग इसे 'आइने दससाला' भी कहते है | यह जब्ती प्रणाली केवल आठ सूबों,लाहौर, आगरा,इलाहाबाद,दिल्ली,मालवा,अजमेंर,अवध और सुल्तान में प्रचलित की गई थी |

न्याय प्रबंध

- अकबर में, न्याय के संबंध में बड़ी ऊंची भावना पाई जाती थी | वह स्वयं कहा करता था,'यदि मै किसी न्याय का अपराधी हूँगा तो स्वयं ही अपने विरुद्ध निर्णय करूंगा' | उस का न्याय प्रबंध मोटे रूप से निम्नोक्त ढंग से संचालित होता था |
- **केन्द्रीय न्याय प्रबंध :**सम्राट की अदालत सबसे बड़ी थी,जहां बड़े-2 मुकदमों का निर्णय किया जाता था | मृत्यु दंड देने का अधिकार केवल 'सम्राट को ही था | सम्राट के बाद मुख्य कांजी का स्थान था | वह समस्त न्याय प्रबंध का निरीक्षण करता था और सम्राट के आदेशानुसार प्रांतों,सरकारों,परगनों तथा नगर के काजियों को नियुक्त करता था तथा उसके निर्णयों के विरुद्ध अपीलें सुनता था |
- **प्रांतीय न्याय प्रबंध :** प्रत्येक प्रांत की राजधानी में तीन प्रकार की अदालतें होती थीं:
    1. सूबेदार की अदालत
    2. दीवानी अदालत
    3. काजी की अदालत
- सूबेदार की अदालत में फौजदारी मुकदमों के संबंध में अपीलें सुनी जाती थीं और शाही फरमानों का उल्लंघन करने वालों को दंडित किया जाता था | दीवानी अदालतें कर संबंधी मुकदमों का निर्णय करती थीं | लगभग अन्य सभी प्रकार के मुकदमों के फैसले काजी की अदालत में होते थे | काजी की सहायतार्थ मुफ़्ती और मीर अदल होते थे |

- सरकार,परगने तथा नगर की न्याय व्यवस्था वहां के स्थानीय अधिकारीयों के द्वारा होती है सरकार में फौजदारी, काजी और कोतवाल द्वारा होते थे | परगनों में ऐसे मुकदमों का निपटारा शिकदार करता था, जब कि दीवानी मुकदमों के निर्णय आमिल द्वारा किए जाते थे | ग्राम की न्याय व्यवस्था पंचायते चलती थीं |

जहांगीर तथा शाहजहाँ

- अकबर के बाद उसका पुत्र सलीम जहांगीर के नाम से शासक बना(1605) उसने 22 वर्ष राज किया | उसने हरियाणा में अपने पिता द्वारा लागू की गई व्यवस्था को बरकरार रखा | उसने दो-तीन काम अलग ढंग के भी किए | मसलन,अपने शासन के प्रथम वर्ष में उसने यहां बहुत बड़ी संख्या में वृक्षों के लगाने के सख्त आदेश जारी किए | फलत: हर जगह हजारों वृक्ष लग गए | राज्य के हरियाली बढ़ी | का जारी करना था | उसने सब मार्गो पर प्रत्येक 12 मील पर सराय आदि बनवाए और यात्रियों को अन्य सुविधाएँ दीं |
- जहांगीर के बाद शाहजहां भारत सम्राट बना(1627) | उसका ज्येष्ठ पुत्र द्वारा शिकोह हरियाणा को बहुत ज्यादा पसंद करता था | वह प्राय: यहां के छोटे से नगर पलवल में रहा करता था | यहीं एक लड़का भी पैदा हुआ था | जिसका नाम सिपहर शिकोह था | यहीं दारा की सेवा में मेंवात का प्रसिद्ध सरदार फिरोज खां मेंवाती भी रहता था | इसके अतिरिक्त दारा के पास हिसार फिरोजा की फौजदारी भी थी |
- एक नई प्रशासनिक इकाई बनाई जिसे चकला कहते थे जैसे आजकल कुछ तहसीलों को मिलाकर एक 'सब डिविजन' बना देते है,ऐसे ही शाहजहाँ ने कुछ परगनों को मिलाकर चकले बनाए थे | चकलों का सबसे पहले जिक्र सरकार के संदर्भ में देखने को मिलता है-किन्ही कृपाराम(गौड़) को हिसार के चकले का हाकिम नियुक्त किया गया था |
- शाहजहां ने कुछ सरकारों को एक सूबे से निकाल कर दुसरे में डाला | इन सरकारों में तिजारा और नारनौल की सरकारों को सूबा आगरा से निकालकर सूबा दिल्ली में रखा | वस्तुत: यह परिवर्तन हर दृष्टि से उचित था क्योंकि ये दोनों सरकारें हर तरह से दिल्ली सरकार में ही होनी चाहिए थीं |
- शाहजहां ने हरियाणा में कुछ सिंचाई के साधन भी उपलब्ध कराए,जिनका जिक्र अन्यत्र किया गया है | उसने कई जगह, जहां कम पैदावार होती थी,लगान कम किया |
- शाहजहां को हरियाणा का धार्मिक नगर थानेसर भी अच्छा लगता था | यहां उसका धर्म गुरु शेख चेहली रहता था,जिसकी सेवा में वह बहुधा आया करता था | महाराजकुमार दारा शिकोह भी इस संत से काफी प्रभावित था और इसे अपना गुरु मानता था | कहते है शेख की मृत्यु होने पर दारा ने ही उसका संगमरमर का मकबरा बनाया था जो आज भी थानेसर में अपने भव्य रूप में खड़ा है |

औरगंजेब का राज्यकाल

- दारा बादशाह नहीं बन पाया-यह सौभाग्य औरगंजेब ने पाया | औरगंजेब के समय(1658-1707) यहां शांति नहीं रहीं | यहां के लोग दारा के पक्ष में थे,अत:उन्हें दारा का कातिल और पितृ घातक औरगंजेब फूटी आंख भी नहीं भाता था | दुसरे,उसने जो लोगों पर कमरतोड़ कर लगाए उनसे वे बेहद परेशान हो गए | तीसरे उसकी धार्मिक ज्यादतियों भी सुलगती आग पर घी का काम किया | फलत: कई जगह विद्रोह फुट पड़े |

रेवाड़ी रियासत की उन्नति

- सबसे पहला आदमी जिसने औरगंजेब की व्यवस्था को बिगाड़ा वह सांवलिया मेंव था | वह सांहोला का रहने वाला था जो सोहना-तावडू सड़क पर एक प्रसिद्ध गांव है सांवलिया के पास मेंवों की फुर्तीली सेना थी जिससे यह दूर-दूर तक वार करता था और शाही सेनाओं तक को लुट लेता था |
- दूसरा ऐसा ही व्यक्ति हाथीसिंह बड़गूजर था | यह दहना गांव का रहने वाला था इस गांव को आजकल बादशाहपुर कहते है | यह भी राज्प्तो की धाड़ बनाकर दूर-दूर तक लूटमार करता था | इससे भी औरगंजेब अत्यधिक परेशान था |
- रेवाड़ी के पास गढ़ी बोलनी गांव का एक शक्तिशाली ठिकाना था | यह हुमायूं के समय से चला आ रहा था | अब यहां ठिकानेदार राव नन्दराम था जो कि किसी की अधीनता नही ,मानता था | औरगंजेब ने हाथीसिंह बड़गुजर से निपटने के लिए इस सरदार की सहायता ली |

नन्दराम ने बड़ी आसानी से हाथीसिंह को पकड़कर औरगंजेब के हवाले कर दिया | इस सहायता से प्रसन्न होकर औरगंजेब ने रेवाड़ी के आसपास के सारे क्षेत्र की चौधराहट नन्दराम को दे दी | रेवाड़ी का प्रसिद्ध ठिकाना अब राज्य में बदल गया |

घासेड़ा की नई जागीर

- हाथीसिंह औरसांवलिया मेंव की शुत्रता थी | औरगंजेब ने हाथीसिंह को इस शर्त पर रिहा कर दिया कि वह सांवलिया को समाप्त कर देगा | हाथीसिंह ने रिहा होते ही सांवलिया का कत्ल कर दिया | इससे प्रसन्न होकर औरगंजेब ने हाथीसिंह को धासेड़ा की ग्यारह गांवों की जागीर दें दी | जब मेंवातियों ने सांवलिया के दमन की बात सुनी तो भड़क उठे | इन्हें दबाने के लिए स्वयं औरगंजेब को सेना लेकर आना पड़ा | मेंवाती कुछ दिन तक सम्राट को छकाते रहे | पर अंत में वे हार गए |

सतनामियों का विद्रोह

- मेंवात शांत हुआ तो नारनौल क्षेत्र भड़क उठा(1672) वहां ऐसा धमाका हुआ कि आलमगीर का तख्त ही हिल उठा | यह धमाका वीर सतनामियों ने किया था | ये लोग हिन्दू धर्म को समुन्नत एवं प्रबल बनाने के लिए मध्ययुग में भारत के विभिन्न भागों में जो भक्ति आंदोलन चला था | उसी की उपज थे |
- इस आंदोलन के यहां चलाने वाले नारनौल के समीप बिजेसर नामक गांव में रहने वाले एक भक्त वीरभान थे | वीरभान ने इस जमायत की नींव सन 1543 ई. में रखी थी | इस जमात को लोग अलग-2 नामों से पुकारते थे | इनमें अहीर,सुनार,खाती,दलित तथा दुसरे छोटे धंधे करने वाले लोग शामिल थे |
- अकबर और जहांगीर के समय सतनामी लोग बड़े शांतिमय ढंग से अपने गांवों में रहते रहे | किन्तु औरगंजेब बादशाही के अहलकारों से आए दिन उनकी टक्कर हो जाया करती थी |
- जब शाही सेना नारनौल के स,समीप पहुंची तो सतनामी उन पर बज की तरह टूट पड़े | बड़ा भयानक युद्ध हुआ | सतनामियों के वीरत्व एवं रणकौशल को देखकर बड़े-2 मुगल सेना नायकों ने दातों तले उंगली दबा ली | पीछे न हटने की तो मानो सतनामी सौगंध खाकर ही आए थे | सैकड़ों सतनामी कटकर ढेर हो गए किन्तु मुगल सेना दस कदम भी आगे न बढ़ पाई | बहुत देर तक युद्ध इसी भयंकर रूप में होता रहा | अंत में अधिक संख्या,अच्छे हथियार और सुव्यवस्थित ढंग से लड़ने वाली मुगल सेना उन्हें दबोच लिया | किन्तु जब तक एक भी सतनामी बाकी बचा रहा मुगल सेना अपने आपको बिजयी ण कह सकी |
- 1707 ई० में औरगंजेब की मृत्यु हो गई |

बन्दा बहादुर का आक्रमण

- गुर गोविन्दसिंह की प्ररेणा पाकर बन्दा बहादुर ने उत्तर दिशा में कुच किया | औरगंजेब की मृत्यु से उत्पन्न स्थिति का लाभ उठाकर वह उन जालिम स्थानीय हाकिमों का अंत करना चाहता था, जिन्होंने उसे और उसकी तरह कितने ही अन्य धर्म-पुरुषों को तंग किया था, तथा गुरु गोविन्दसिंह के परिवार पर जुल्म किए थे |
- बन्दा बहादुर ने सिहरी-खाण्डा नामक गांव को अपना मुख्यालय बनाया | यह गांव रोहतक से कोई 30 कि.मी(रोहतक-सोनीपत सड़क से थोड़ी दूर के फासले पर स्थित है | यहां जाट लोग अधिक बसते है यहां देखते ही देखते बन्दा बहादुर के बहुत से अनुयायी हो गए |
- बन्दा ने सरहिंद को अपने नव-विजित राज्य का मुख्यालय बनाया | अब वह लगभग सारे उत्तरी हरियाणा और दक्षिणी पंजाब का मालिक था | उसने कई प्रशासकीय व्यवस्था कायम की जो सैद्धांतिक रूप से मुग़ल व्यवस्था की तरह ही थी | उसका शासन न्याययुक्त और दयालु था | उसमें आर्थिक शोषण के लिए कोई जगह नहीं थी | न धर्म का भेदभाव था और न ही जाति-पाती की रूह-रियायत |

मुगलों से टक्कर

- बन्दा बहादुर की इन गतिविधियों से सब कुछ थर्रा उठा |
- मुगल राज्य के अस्तित्व को ही खतरा हो गया | अत: वृद्ध बहादुरशाह को सेना लेकर उससे भिड़ने के लिए स्वयं मैदान में आना पड़ा (1710) | उसके साथ मेंवात का एक प्रसिद्ध सरदार फिरोज खां मेंवाती भी था | वास्तव में बन्दा से पहली भिडंत फिरोज ने ही की | 26 अक्तूबर को करनाल और इन्द्री के बीच उसने बन्दा की सेना को पहली करीरी हार दी | बन्दा थोडा पीछे हटा

और उसने दोबारा भाग्य अजमाया | फिर भी उसे हार ही हाथ लगी | तीसरी टक्कर तरावड़ी में हुई | वहां भी फिरोज की ही जीत हुई | तीन बार हार कर बन्दा थानेसर चला गया |

- यहां उसने अपनी सेना का पुनर्गठन किया | सैनिकों को साहस दिया और नए सिरे से मैदान में उतारा | परन्तु इस बार भी उसे असफलता ही हाथ लगी | लेकिन इस पर भी वह नही घबराया और तेजी से बढ़ते हुए पंजाब में घुस गया | सरहिंद के फौजदार ने अब चौकस मोर्चाबंदी कर ली थी | उसने बन्दा के बढ़ते हुए कदम रोक दिए और उसे पंजाब से हटने के लिए बाध्य कर दिया |
- बन्दा ने पुन: हरियाणा में अपने पैर जमाए | अब उसका मुख्यालय उत्तर-पूर्व हरियाणा में अंबाला जिले के एक छोटे से कस्बे सढ़ौरा में था | हरियाणा में आते ही बन्दा की स्थिति फिर मजबूत हो गई |

Empowering Youth Empowering Nation
HARYANA JOB ALERT
हर सवाल का जवाब!